Artistic Narration Vol. XV No. 1 Jan.-June 2024 ISSN (P): 0976-7444 (e): 2395-7247
Impact Factor 8.898 (SJIF)

पिछवाई कला में चित्रकार राजाराम शर्मा का योगदान

डॉ० ओ०पी० मिश्रा
(प्राचार्य)
मिनर्वा इंस्टीट्यूट ऑफ मैनेजमेंट एंड टेक्नोलॉजी
देहरादून, उत्तराखण्ड
ईमेलः mishraop200@gmail.com

शिवांशी लोध
शोधार्थी
मिनर्वा इंस्टीट्यूट ऑफ मैनेजमेंट एंड
टेक्नोलॉजी देहरादून, उत्तराखण्ड

Reference to this paper should be made as follows:

डॉ० ओ०पी० मिश्रा,
शिवांशी लोध

पिछवाई कला में चित्रकार राजाराम शर्मा का योगदान

Artistic Narration 2024,
Vol. XV, No. 1,
Article No. 10 pp. 61-64

Online available at:
https://anubooks.com/journal-volume/artistic-narration-2024-vol-xv-no1-233

सारांश

भारतीय चित्रकला में पिछवाई कला का अपना एक महत्व है। पिछवाई कला राजस्थान के नाथद्वारा की लोक कला के रूप में प्रसिद्ध है। इस कला का परिचय 400 वर्ष पूर्व हुआ था। पिछवाई चित्रण कपड़े पर किया जाता है और इसका उपयोग मंदिरों में ईश्वर की पृष्ठभूमि में किया जाता है। यह कला नाथद्वारा स्थान और वहां रहने वाले कलाकारों ने विकसित की थी। इस कला में श्री कृष्ण की कथाओं को चित्रित किया जाता है। पिछवाई कला को करने वाले चित्रकार नाथद्वारा के हैं, जो अपनी पारंपरिक व सदियों से चली आ रही कला को आगे बढ़ा रहे हैं। नाथद्वारा के कलाकारों में से एक है "राजाराम शर्मा"। पिछवाई कलाकारों में चित्रकार राजाराम शर्मा की अपनी एक पहचान है। नाथद्वारा के अन्य कलाकारों के समान ही राजाराम शर्मा जी भी भगवान श्री कृष्ण जी के श्रीनाथजी स्वरूप का चित्रण करते हैं। श्रीनाथजी एक बच्चे का रूप है और उन्हें इसी स्वरूप में नाथद्वारा के चित्रकार चित्रित करते हैं।

मुख्य बिन्दु

पिछवाई कला, श्रीनाथजी, नाथद्वारा।

डॉ० ओ०पी० मिश्रा, शिवांशी लोध

भारत में अनेक कला शैलियां है। जिसमें में राजस्थान के नाथद्वारा स्थान की पिछवाई कला शैली बहुत प्रसिद्ध है। पिछवाई का शाब्दिक अर्थ है पीछे वाली। कपड़े पर चटक रंगों के माध्यम से पिछवाई कला का निर्माण किया जाता है। पिछवाई चित्रों का उपयोग नाथद्वारा में श्रीनाथजी के मंदिरों में मुख्य मूर्ति की पृष्ठभूमि या मूर्ति के पीछे की दीवार पर किया जाता है। यह पिछवाई सुंदरता को और अधिक बढ़ा देती है और आकर्षक भी लगती है। पिछवाई कला में श्री कृष्ण जी की जीवन की कहानी बनाई जाती है। एक सुंदर पिछवाई बनाने में बहुत समय लगता है। और इसको बनाने के लिए कुशलता की आवश्यकता होती है। पिछवाई कला में श्रीनाथजी के साथ–साथ राधा, गोपियों, कमल व गाय को भी चित्रित किया जाता है। इनके अलावा रासलीलाएं, गोवर्धन पूजा, होली, महारास, अन्नकूटोत्सव, तुलसी विवाह, कृष्ण जन्म, माखन चोरी, जन्माष्टमी, आदि जैसे त्योहार भी चित्रित किए जाते हैं।

इस कला में प्रतीकात्मक चित्रण किया जाता है। इस चित्रण शैली में श्रीनाथजी के चित्र को मंदिर की मूर्ति के समान ही चौड़ी नाक, बड़ी लंबी आंखें और भारी शरीर बनाते हैं। चित्रों को अधिकांशतः फूल, जानवर, ज्यामितीय आकृतियों जैसे अलंकरणों द्वारा सुसज्जित किया जाता है। पिछवाई कला में गाय को कामधेनु कहा जाता है जो समृद्धि का प्रतीक है। अलग–अलग रंगों के कमल के पुष्प अलग–अलग ऋतु को दर्शाते हैं। पिछवाई कला में कपड़े या कागज पर लाल, पीले, हरे जैसे चमकदार रंगों का प्रयोग किया जाता है जो श्री कृष्ण की ऊर्जा का प्रतीक है। चित्रण के लिए प्राकृतिक रंगों का उपयोग किया जाता है जैसे, केसर, सोना, चांदी, कोयला, आदि।

पिछवाई कला की तकनीक यह है कि इस कला के लिए सूती कपड़े का प्रयोग किया जाता है। फिर इस कपड़े पर चित्रण करने के लिए कपड़े को परंपरागत विधि के अनुसार तैयार किया जाता है। सपाट धरातल पर कपड़े को बिछाकर अरारोट की लेई द्वारा चिपकाकर एक समान किया जाता है। अब रेखांकन के लिए विषय अनुसार गेरू रंग व बारीक कलम का प्रयोग कर 'खाखा' बनाया जाता है। पृष्ठभूमि में रंग भरने के बाद आकृतियों में रंगन किया जाता है। स्वर्ण रंग से आभूषण व अलंकरण बनाए जाते हैं तथा अंततः गहरे रंग व तूलिका के माध्यम से पिछवाई चित्रण को पूर्ण किया जाता है। चित्रण के रंगों को चमकदार व टिकाऊ बनाने के लिए हकीक पत्थर से पिछवाई को हल्के हल्के घिसा जाता है। महंगी पिछवाई में असली सोने चांदी का प्रयोग किया जाता है। सोने व चांदी के पाउडर को गोंद में मिलाकर प्रयोग किया जाता है।

पिछवाई को तैयार करने के लिए मंदिर के प्रशासन द्वारा कलाकारों को नियुक्त किया गया इन कलाकारों द्वारा अलग–अलग ऋतु और अलग–अलग त्योहारों के अनुसार पिछवाई चित्रण का कार्य प्राप्त होता है। पुष्टि मार्ग समुदाय ने पिछवाई कला के निर्माण में अपनी अहम भूमिका निभाई। इस कला में चित्रण अपनी कल्पना शक्ति के अनुसार किया जाता है।

नाथद्वारा के कलाकारों में से एक चित्रकार "राजाराम शर्मा" जी ने इस पिछवाई कला शैली में अपना एक नाम बनाया है। राजाराम शर्मा का जन्म 9 जून 1963 में हुआ। यह राजस्थान के भीलवाड़ा से हैं। राजाराम शर्मा जी ने 13 साल की उम्र में तुलसीदास जी को अपना गुरु बनाया और उनसे प्रशिक्षण प्राप्त किया। तुलसीदास जी नाथ द्वारा के ही चित्रकार थे। राजाराम जी का कहना था कि **"इस कला ने मुझे अपनी मिट्टी से जोड़ा है, मैं इस कला को देश–विदेश में ले जाऊंगा।"**

राजाराम जी ने नाथद्वारा के कई पिछवाई कलाकारों से शिक्षण प्राप्त किया और साथ ही में इन्होंने लघु चित्रकला भी सीखी। राजाराम शर्मा ने पिछवाई चित्रों में श्री कृष्ण जी के जीवन की हर एक कहानी व किस्सों को अपने चित्रों के माध्यम से प्रस्तुत किया। इन्होंने श्री कृष्ण की लीलाओं को जटिल रंगों व विवरण के माध्यम से कपड़ों पर उतारा। राजाराम शर्मा जब 22 साल के हुए तब इन्होंने छाया शर्मा के साथ विवाह किया। उनकी पत्नी छाया नाथद्वारा के चित्रकारों के वंशज में से ही है। छाया नाथद्वारा के प्रसिद्ध कलाकार भूरालाल जी की पोती हैं राजाराम जी की तीन संतान है। जिसमें दो बेटियां स्वाति शर्मा और ज्योति शर्मा है। इनका बेटा रजत शर्मा है जो कि अपने पिता के सानिध्य में पिछवाई कला का प्रशिक्षण प्राप्त कर रहे हैं।

इनके पिछवाई चित्र बहुत सुंदर व आकर्षक होते हैं इनके पिछवाई चित्र कई हिंदू मंदिरों में सुसज्जित है, श्रीनाथजी के मंदिर के साथ–साथ उदयपुर और घसियार में श्रीनाथजी की हवेली में उनके चित्र अपना एक विशेष स्थान प्राप्त किए हुए हैं।

भारत के साथ–साथ विक्टोरिया मोनरोए फाइन आर्ट गैलरी, बोस्टन, अमेरिका में भी इनके पिछवाई चित्र अपनी सुंदरता का परिचय देते हैं।

उदयपुर में राजाराम शर्मा जी का "चित्रशाला" नामक स्टूडियो है। जहां वह अपनी कला के साथ अपने जीवन का हर कदम चलते हैं। वहां उनकी चित्रात्मक कुशलता को देखने का सौभाग्य प्राप्त होता है। इनका पुत्र यही चित्रशाला में उनके साथ रहकर पिछवाई चित्रण का अभ्यास करता है।

राजाराम शर्मा जी को बहुत से पुरस्कार और सम्मानों से गौरवान्वित किया गया है। इन्हें सन 2016 में राष्ट्रीय योग्यता प्रमाण पत्र से सम्मानित किया गया। राजाराम जी ने 2010 में पारंपरिक कला का अखिल भारतीय पुरस्कार, मरुधरा, कोलकाता से प्राप्त किया। इन्होंने सन 2002 में जनगांव, वारंगल में आयोजित सर्व कला प्रदर्शनी में पारंपरिक चित्रकला में स्वर्ण पदक प्राप्त किया। शर्मा जी को पारंपरिक कला का अखिल भारतीय विशेष पुरस्कार टी. एस. एस. से सन 2001 में सम्मानित किया गया था। सन 2001 में ही इन्हें पारंपरिक और लोक कला का अखिल भारतीय पुरस्कार एसजेडी सी.सी. का भी सम्मान प्राप्त है। राजा राम जी ने 1998 में जिला हस्तशिल्प

प्रतियोगिता में प्रथम पुरस्कार हासिल किया। 1998 में ही इन्हें शिक्षा मंत्री द्वारा विशेष रूप से नामित किया गया था। राजाराम जी को राष्ट्रीय पुरस्कार का भी सम्मान प्राप्त है।

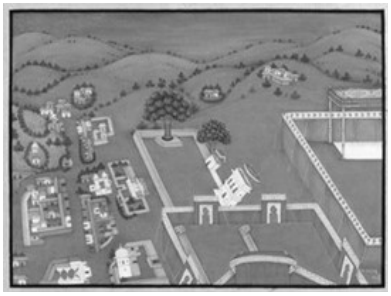

राजाराम शर्मा पिछवाई कला के साथ–साथ लघु चित्रकला में भी निपुण है। शर्मा जी के द्वारा बनाए गए लघु चित्र बहुत से संग्रहालयों में है। जिनमें से बोस्टन म्यूजियम आफ फाइन आर्ट्स, मिडलबेरी कॉलेज, नेशनल गैलरी ऑफ विक्टोरिया, श्रीनाथजी मंदिर, नाथद्वारा, हार्मनी फाउंडेशन मुंबई, आदि सम्मिलित है।

निष्कर्ष

पिछवाई कला भारतीय चित्रकला में कई वर्षों से अपना एक सम्मानित स्थान प्राप्त किए हुए हैं। पिछवाई में श्रीनाथजी के चित्रण के साथ–साथ कमल और गायों का रूपांकन भी अधिक महत्व रखता है। पिछवाई कला का इतिहास उतना ही पुराना है जितना श्रीनाथजी के मुख्य मंदिर का इतिहास है। समय के साथ–साथ यह कला विकसित हुई। समय के साथ–साथ पिछवाई कला में भी व्यावसायिक कल का रूप ले लिया। अब पिछवाई कला केवल मंदिरों में ही नहीं बल्कि लोगों के घरों में सजावट की तरह प्रयोग में आने लगी है। पिछवाई कला की यह विशेषता है कि यह एक आध्यात्मिक महत्व रखती है और यह प्रतीकात्मकता से बहुत समृद्ध है। पिछवाई कला में बनी आकृतियां किसी विषय का प्रतीक होती हैं। नाथद्वारा के कलाकारों ने इस कला शैली को आज भी संभाल के रखा है। राजाराम शर्मा ने भी इस कला को आगे बढ़ाया। आधुनिक काल के समय में भी राजा राम जी ने पारंपरिक पिछवाई कला को सिर्फ भारत में ही नहीं बल्कि विदेशों तक में सम्मान दिलवाया। राजाराम जैसे कलाकारों की वजह से भारत में अपनी पारंपरिक कला आज भी अपना अस्तित्व बनाए हुए हैं। राजाराम जी ने अपने पिछवाई चित्रण में श्री कृष्ण के जीवन के किस्से व उनकी कहानियों को चित्रित किया। राजा राम जी ने पिछवाई कला को आगे बढ़ाने के लिए अपने हर प्रयास किए। इन्हीं प्रयासों में यह भी है कि वह यह कला अपने पुत्र को भी सीखा रहे हैं जिससे कि यह कला आगे भी परंपरागत रूप से बढ़ती रहे। भारतीय परंपरागत चित्रण शैलियों में पिछवाई कला का भी अपना एक महत्व है। राजा राम जी ने पिछवाई कला को सिर्फ भारत तक ही सीमित नहीं रखा उनकी इस कला के चर्चे दूसरे देशों तक भी है जिससे भारतीय कला को एक नया परिचय मिला है व अंतर्राष्ट्रीय मंच भी हासिल हुआ है।

संदर्भ

1. http://rooftop
2. theartistsofnathdwara-org
3. http//www-victoriamunroefineart-com
4. https//itokri-com
5. en-m-wikipedia-org